भगत जयदेव - सबद २

चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥

रागु मारू, भगत जैदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११०६

चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥
अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥
मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥
तेरी दुबिधा द्रिसटि समानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि समानि आइआ ॥
बदति जैदेउ जैदेव कउ रमिआ ब्रह्मु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥२॥१॥

सार: शांत जागरूकता की स्थिर लय हमारे भीतर मज़बूत आधार निर्मित करती है जहाँ प्रतिक्रियाएँ नरम पड़ जाती हैं और दृष्टि अधिक स्पष्ट हो जाती है। यह शांति बदलाव के बीच भी मन को स्थिर रखने में मदद करती है और उसे उथल-पुथल से बचाती है। इसके विपरीत, ऊर्जावान ज्ञान जीवन में उद्देश्यपूर्ण गति लाता है। यह ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो हमारे कर्मों को दिशा देती हैं और सुनिश्चित करती है कि हमारी प्रतिक्रियाएँ जल्दबाज़ी से पूर्ण न होकर सजग और विचारपूर्ण हों। यह दोनों गुण मिलकर काम करते हैं, एक मन को शांत करता है और दूसरा उसे सक्रिय बनाता है। इस तरह, यह हमें जीवन में पूरी तरह से शामिल होने में सक्षम बनाते हैं और साथ ही उस आंतरिक स्थिरता को भी बनाए रखते हैं जो अंततः हमें पूर्णता की ओर ले जाती है।

चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥
जब सत्य को सांस के रूप में भीतर ग्रहण किया जाता है, सत्य ही भीतर गूँजता है और सत्य ही सांस के रूप में बाहर प्रवाहित होता है तब एक निरंतर लय उत्पन्न होती है। चंद्रमा और सूर्य का सांस लेने की क्रियाओं का रूपक, शांत करने वाली जागरूकता और ऊर्जावान ज्ञान के निरंतर प्रवाह को अपने भीतर उतारने के महत्व को व्यक्त करता है। यह दोनों मिलकर एक परिपूर्ण जीवन का निर्माण करते हैं।

अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥
निर्बलता और शक्ति में सामंजस्य स्थापित होता है, गति और स्थिरता संतुलन प्राप्त कर लेते हैं, जो निराकार था वह आकार ग्रहण कर लेता है और तब मैं जीवन के दिव्य अमृत का स्वाद लेता हूँ। यह रूपांतरण दर्शाता है कि जब विरोधी प्रतीत होने वाले तत्व एक हो जाते हैं तब हमारे भीतर गहरी पूर्णता का भाव खिल उठता है। (१)

मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥
मन अस्तित्व के मौलिक गुणों को व्यक्त करना आरंभ कर देता है। इसका तात्पर्य यह है कि जब अंतर्दृष्टि गहरी होती है तब मन अपनी सीखी-सिखाई आदतों या ढर्रों के बजाय, अपने मूल और स्वाभाविक स्वरूप के साथ एकाकार हो जाता है।

तेरी दुबिधा द्रिसटि समानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारी वह संशयपूर्ण दृष्टि जो द्वैत को देखती थी, अब समाप्त हो गई है। यह आंतरिक विभाजन के समाप्त होकर, एकीकृत दृष्टिकोण में विलीन हो जाने का संकेत है, ऐसी अवस्था जहाँ आंतरिक संघर्ष समाप्त होकर पूर्ण सामंजस्य में बदल जाता है। (१)(विराम)

अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि समानि आइआ ॥
मैं उस एकत्व के प्रति समर्पित हूँ जो समर्पण के योग्य है। मैं उस एकता पर भरोसा करता हूँ जो विश्वास के योग्य है, जैसे पानी सहजता से पानी में पूरी तरह मिल जाता है। यह पूर्ण एकीकरण का प्रतीक है जहाँ सारे भेद मिट जाते हैं और सब कुछ एक साँझा निरंतरता में समा जाता है।

बदति जैदेउ जैदेव कउ रमिआ ब्रह्मु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥२॥१॥
जयदेव कहते हैं कि सर्वव्यापी एकता में डूबकर, उनको ऐसी चेतना प्राप्त हुई है जो रूप-रंग से हटकर, असीम शांति में विलीन हो जाती है। यह उस एकीकरण को दर्शाता है जिसमें हमारी व्यक्तिगत पहचान, अस्तित्व की विशाल एकता में सहजता से समा जाती है। (२)(१)

तत्त्व: भक्त जयदेव बल देकर कहते हैं कि एकत्व को अपने जीवन में धारण करना हमारे गहनतम सम्मान, विश्वास और जुड़ाव के योग्य है। इस सर्वव्यापी एकता के प्रति पूरी तरह से समर्पित होकर, हम ऐसी गहरी चेतना को उजागर करते हैं जो भौतिक रूप से दूर है और हमें ज्ञान के अनंत स्रोत से जोड़ती है। यह परिवर्तनकारी यात्रा एकीकरण को दर्शाती है जहाँ हमारी अपनी विशिष्ट व्यक्तिगत पहचानें अस्तित्व की विशाल एकता में सामंजस्य से विलीन हो जाती हैं जिससे जीवन के हमारे सामूहिक अनुभव में सार्थक तरीकों से निखार आता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com